ISSN - 2231 - 5837
RNI - UPBIL / 2011 / 38102
www.ijscjournal.com
Journal Impact Factor No. : 7.01

This International Peer-Reviewed & Refereed Journal
is available in Print as well as Online

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)
(कला–मानविकी–समाजविज्ञान–जनसंचार–विधि–वाणिज्य–विज्ञान, वैचारिकी की अन्तर्राष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume - 12 : Issue - 52 Mar.- Apr. 2023 Ghaziabad

Research Journal is indexed in the International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database

Dr. Dinesh Chander Shukhla
Guest Editor

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

डॉ० हरिशरण वर्मा की कुछ साहित्यिक पुस्तकें

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ० राजनारायण शुक्ला द्वारा आदर्श प्रिंट हाऊस, बी–३२, महेन्द्रा एन्क्लेव, शास्त्री नगर, गाज़ियाबाद में मुद्रित कराकर, SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ० राजनारायण शुक्ला। **पंजीकरण संख्या** : ISSN-2231 - 5837

गढ़वाल हिमालय में पर्यटन एवं उसका क्षेत्रीय सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव

13

डॉ0 प्रदीप कुमार

सारांश

पर्यटन उप प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का गठजोड़ है जो यात्रा एवं प्रवासी के ठहरने से उत्पन्न होती है। पर्यटन का अर्थ आराम एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्रा करना है। अध्ययन क्षेत्र 20° 26′ से 31° 27′ उत्तरी अक्षांश एवं 77° 34′ से 81° 17′ पूर्वी देशान्तर तक है जिसका क्षेत्रफल 32510 वर्ग किलोमीटर है। भौगोलिक दृश्टि से यह क्षेत्र मैदानी भाग से पर्वतीय भाग तक सम्मिलित है। गढ़वाल हिमालय का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। यहाँ का मुख्य व्यवसाय पर्यटन है। पर्यटन का न केवल धार्मिक महत्व है वरन् सांस्कृतिक महत्व भी है। पर्यटन एक श्रमप्रधान उद्योग है जो कुशल और अकुशल दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों को रोजगार देता है। यहाँ पर अनेको पर्यटक स्थल है जहाँ पर लाखों की तादाद में पर्यटक प्रति वर्ष आते है जिसमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक सम्मिलित है। गढ़वाल हिमालय पर्यटन सम्बन्धी आकर्षण से भरपूर है। पर्यटन विकास के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी सुविधाओं को विकसित करने की आवश्यकता है।

प्रस्तावनाः

पर्यटन शब्द से आशय विभिन्न स्थानों की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण तथा विभिन्न राष्ट्रों व क्षेत्रों के स्थलों की यात्रा करने के लिए किया गया था। यात्री किसी विशेष स्थान पर जाकर खोज करता है। इसी प्रकार पर्यटक की किसी नये स्थान के सम्बन्ध में जिसके विषय में केवल सुना है ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा होती है साथ ही उसको व्यापार रोजगार की संभावनाओं की जानकारी स्वास्थ्य एवं शिक्षा लाभ पर्यावरण व मनोरंजन से सम्बन्धित सम्पत्ति विषय में जानकारी प्राप्त करना भी पर्यटक की आकांक्षा होती है। पर्यटन उप प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का गठजोड़ है जो आय एवं प्रवासी के ठहरने से उत्पन्न होती है लेकिन इससे स्थायी निवास की क्रिया का जन्म नहीं होता है तथा यह किसी धन अर्जन पर्यटक करने की क्रिया से सम्बन्धित नहीं हो अस्थायी आगन्तुक जो कम से कम एकरात्रि के लिए यात्रा करने वाले देश में ठहरते हैं तथा जिनकी यात्रा का उद्देश्य विलासिता, मनोरंजन अवकाश स्वास्थ्य अध्ययन और क्रीड़ा व्यापार व पारिवारिक मेलजोल से सम्बन्धित है। इस प्रकार पर्यटन का अर्थ केवल आराम, मनोरंजन तथा आनन्द तक ही सीमित नहीं है वरन इसके अन्तर्गत अन्य व्यापार सम्बन्धी यात्रा एवं समस्त प्रकार की यात्राएं सम्मिलित हैं, जिनका वेतन युक्त रोजगार से कोई सम्बन्ध नहीं है। सम्पूर्ण विश्व में आयु स्तर में वृद्धि होने से पर्यटन की समान्यता में महत्वपूर्ण वृद्धि हो रही है। अतएव पर्यटन उद्योग सम्बन्धी आँकड़े एकत्रित करना तथा उन्हें अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्लेषित करने के लिए इन सूचनाओ एवं आंकड़ों की महत्ता बढ़ती जा रही है।

अध्ययन क्षेत्रः प्रस्तुत शोध–पत्र का अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल हिमालय उत्तराखण्ड राज्य है। प्राचीन काल में इसे केदार खण्ड खश आदि के नाम से जाना जाता था गढ़ों (किले या छोटे–छोटे राज्य) की बहुलता होने के कारण ही इस भू–भाग का नाम गढ़वाल गढ़ों का पड़ा गढ़वाल हिमालय का अक्षांशीय विस्तार 20°26′ उत्तरी अक्षांश से 31°27′ उत्तरी अक्षांश और देशान्तरीय विस्तार 77°34′ पूर्वी देशान्तर से 81°7′ पूर्वी देशान्तरीय के मध्य स्थित है। गढ़वाल हिमालय का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल उत्तर 32510 वर्ग किलोमीटर है। गढ़वाल हिमालय तिब्बत हिमालय (चीन) पश्चिम में टोंस नदी (हिमालय प्रदेश) पूर्व में कुमायूँ हिमालय तथा दक्षिण में उत्तर–प्रदेश स्थित है। प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र में अनेक ऋषि मुनियों ने अपने आध्यात्मिक केन्द्र स्थापित किए हैं। इसलिए इसे देव भूमि' भी कहा जाता है। यह क्षेत्र न केवल सैलानियों बल्कि भू–वैज्ञानिकों, झाणी एवं वनस्पति, शास्त्रियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है हिन्दुओं व सिक्खों के अति पवित्र स्थल चार धाम पंच केदार, पंचबद्री तथा हेमकुण्ड साहिब आदि इसी भू–भाग के अन्तर्गत हैं। समय–समय पर इसकी प्राथमिकता ने अन्य अन्य मतों, सम्प्रदायों, धर्मों को अपनी ओर आकर्शित किया है। गढ़वाल हिमालय का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

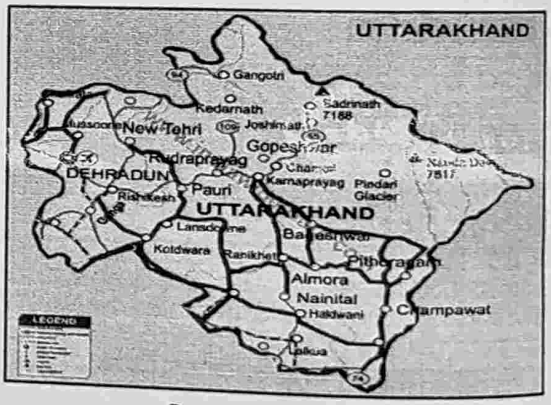

तालिका संख्या – 01

गढ़वाल हिमालय का विवरण

क्र0 सं0	विकासखण्ड	मुख्यालय	क्षेत्रफल वर्ग किलोमीटर	जनसंख्या 2011	प्रमुख धार्मिक पवित्र पर्यटन स्थ
1–	उत्तरकाशी	उत्तरकाशी	7951	330090	गंगोत्री, यमुनोत्री
2–	चमोली	गोपेश्वर	7692	391605	पंचबद्री, केदारनाथ, हेमकुण्ड, देवप्रयाग
3–	पौड़ी गढ़वाल	पौड़ी	5438	687271	जोशीमठ
4–	टिहरी गढ़वाल	टिहरी	4085	618931	देवप्रयाग
5–	देहरादून	देहरादून	3088	1696694	सेम–मुखेम, पवांली
6–	रूद्रप्रयाग	रूद्रप्रयाग	1896	242265	गुरू रामराय, लक्ष्मण सिंह, ऋषिकेश
7–	हरिद्वार	हरिद्वार	2360	1890422	मन्दाकिनी तथा अलकनन्दा का संगम, कोटेश्व चण्डीदेवी, मंसादेवी, शान्तिकुज, दक्षप्रजापति पिरानकलियर शरीफ

स्रोतः उत्तराखण्ड सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभाग देहरादून 2022।

अध्ययन का उद्देश्यः

उत्तराखण्ड प्रदेश सांस्कृतिक विविधता का वैभवशाली भूगोल है । गढ़वाल हिमालय की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की

भूमिका पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने का एक प्रयास है। पर्यटन उद्योग यात्रियों के सामाजिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को सबल आर्थिक सम्बल प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है:–

1. अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की पर्यटन के आधार पर साामजिक –आर्थिक विकास की विवेचना करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में रोजगार के नवीन अवसर खोजना एवं घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्शित करने हेतु तरीके एवं उपयों को सुझाना।
3. अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास हेतु पर्यटकों को पूँजी निवेश हेतु प्रोत्साहित करना।
4. अध्ययन क्षेत्र के निवासियों के जीवन स्तर पर पर्यटन के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. अध्ययन क्षेत्र की उन मुख्य समस्याओं एवं मुद्दों को खेजना जो पर्यटन सेवाओं से सम्बनध है निराकरण की सम्भावना पर विचार करना।

शोध परिकल्पनाः

पर्यटन सामान्यतः दो प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है– 1. स्थिर क्षेत्र 2. अस्थिर क्षेत्र। स्थिर क्षेत्र के अन्तर्गत वे समस्त आर्थिक क्रियाएँ सम्मिलित होती है जो कि समुदाय के निर्माण मांग को आकर्षित करने एवं परिवहन व्यवस्था से सम्बन्धित हैं। इसके अन्तर्गत परिवहन प्रचालकों यात्रा अभिकर्ताओं परिवहन संस्थाओं व अन्य सहायक सेवा की क्रियाएँ सम्मिलित हैं। अस्थिर क्षेत्र के अन्तर्गत अल्पकालीन प्रवास आवास सुविधा, भोजन की मांग आदि क्रियाएँ सम्मिलित की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ में शोध

परिकल्पनायें इस प्रकारः–

1. पर्यटन रोजगार के अवसरों में वृद्धि करता है तथा दुर्लभ विदेशी मुद्रा अर्जित कर व्यापार सन्तुलन में योगदान करता है।
2. पर्यटकों से प्राप्त धन श्रृंखला गुणांक के प्रभाव का सृजन करता है।
3. विदेशी पर्यटकों द्वारा व्यय किया गया धन अध्ययन क्षेत्र की आय को बढ़ाने का साधन है।
4. पर्यटन को अन्य उद्योगों की भांति अधिसंरचना की पूर्व आवश्यकता होती है।
5. पर्यटन राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को प्रोत्साहित करता है –क्योंकि पर्यटन शान्ति का पारयंत्र है।

प्राकृतिक स्वरूपः

अध्ययन क्षेत्र में समुद्रतल से 200 मीटर से ऊपर की ऊँचाई वाले इस क्षेत्र की जलवायु भू–आकृति तथा प्राकृतिक वनस्पति में विभिन्नतायें पायी जाती है। यह प्रदेश एक जटिल भौतिक इकाई है जो हिमालय के उत्थान की प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है। इसका अधिकांश भाग हिमाच्छदित रहता है। यहाँ नन्दा देवी (7817 मीटर) सर्वोच्च शिखर है। फूलों की घाटी स्थित है। कुछ जगह छोटे – छोटे घास के मैदान हैं जिन्हें बुग्याल, प्यार तथा अल्पाइन पाश्चर्स आदि नामों से पहचाना जाता है। वहीं दूसरी ओर शिवालिक श्रेणियों के दक्षिण में मैदानी क्षेत्र से लगा हुआ पेडीमेंट क्षेत्र दक्षिण व दक्षिण पूर्व की ओर न्यून दाल वाली स्थलाकृति भावर व तराई के नाम से जानी जाती है। इसकी औसत ऊँचाई 150 मीटर तक है। जलवायुविक दृष्टि से यहाँ पर ग्रीष्म, शीत एवं वर्षा ऋतु होती है। औसत अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेन्टीग्रेड एवं न्यूनतम तापमान हिमांक बिन्दु तक, औसत वर्षा 250 सेन्टीमीटर, सापेक्षिक आर्द्रता 75 प्रतिशत एवं वायु की गति 6.00 किलोमीटर प्रति घण्टा है। अधिकांश क्षेत्र हिमाच्छादित रहता है। यह क्षेत्र हिमनदों के लिए प्रसिद्ध है। खतलिंग, यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, पिंडर अंदर दूंगा, कफनी, मिलम और जोलिंगकांग मुख्य ग्लेशियर है। टोंस यमुना, भागीरथी, भिलंगना, मंदाकिनी, अलकनंदा, पिंडर, सरम्, गौरी, धौली, कुटी, काली आदि नदियाँ है। इसके अलावा गढ़वाल अनेक झीलों के लिए भी प्रसिद्ध है। गढ़वाल हिमालय में पर्वतीय छिछली उप–पर्वतीय मिट्टी लाल व पीली मिट्टी, भांवर तराई मिट्टी पाई जाती है। प्राकृतिक वनस्पति के दृष्टिकोण से गढ़वाली हिमालय समूह है। सम्पूर्ण भू–भाग के 65 प्रतिशत भू–भाग पर वन पाये जाते है जिसमें 36 प्रतिशत वन उत्तरकाशी जनपद में पाये जाते है।

आर्थिक दशायें:

गढ़वाल हिमालय में मुख्य व्यवसाय पर्यटन है जिसमें परिवहन, संचार भोजन प्रबन्धन एवं लोक संस्कृति एवं कला है। इसके साथ ही कृषि कार्य भी किया जाता है जिसमें खाद्यान्न फसलों के साथ ही दलहन, तिलहन, गन्ना एवं साग–सब्जी की खेती की जाती है। पशुपालन कार्य दुग्ध प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है। इसके साथ ही मत्स्य पालन भी किया जाता है। देहरादून एवं हरिद्वार जनपद में अधिकांशतया कृषि एवं पशुपालन कार्य 850 किए जाते हैं। गढ़वाल हिमालय में सड़कों की लम्बाई 10 किलोमीटर है। इसके अलावा रेल मार्ग की लम्बाई 150 किलोमीटर है। देहरादून में हवाई अड्डा है। आवासीय प्रबन्धन में होटल, धर्मशालायें गेस्ट हाउस, हास्टल, सराय, मोटल मुख्य है। सम्पूर्ण क्षेत्र में 1500 आवास पर्यटकों को ठहरने के लिए है। पर्यटकों को घूमने के लिए टैक्सी, गाइड एवं रहने से स्थानीय लोगों को रोजगार की समुचित प्राप्ति होती रहती है।

पर्यटन की सामाजिक विकास में प्रासंगिकताः

पर्यटन हमारी प्राचीन संस्कृति का एक विशेष अंग रहा है। सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री धाम चिरकाल से हालओं को आकृष्ट करते रहे है। हरिद्वार में आयोजित होने वाले कुम्भ मेले में देश–विदेश के लाखों–करोड़ों श्रद्धालुजन पावन गंगा में डुबकी लगा कर अपार पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। पर्यटन का न केवल धार्मिक महत्व है सांस्कृतिक महत्व भी है। विशिष्ट प्राचीन सभ्यता व वरन्, संस्कृति यहाँ के धर्म, दर्शन, रीति–रिवाज, रहन–सहन, लोकगीत लोकनृत्य, पर्व–त्यौहार आदि में रची–बसी है। विविधता पूर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे हिमाच्छादित पर्वत शिखर, उष्ठा जल स्रोत, विचित्र चमत्कारिक गुफायें, चित्ताकर्षक वन्य जीवों के साथ–साथ अविस्मरणीय धार्मिक स्थलों एवं मन्दिरों में रची–बसी सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान कराने में पर्यटन की अविस्मरणीय भूमिका है। पर्यटन के माध्यम से यहाँ के लोग विभिन्न देशों व राज्यों के रीति–रिवाजों व रहन सहन से

परिचित हुए हैं जिससे उन्हें अपने रहन सहन के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायता मिली है। पर्यटन से यहाँ के निवासियों की मानसिकता में सुधार हुआ है। शक व विश्वास की भावना कम हुई है तथा वैमनस्य की भावना का अन्त हुआ है। पर्यटन इस क्षेत्र की लोककलाओं लोकनृत्य, लोक संगीत, रहन–सहन, खान–पान के प्रचार का सशक्त माध्यम है। भाषायी जातीय, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों का आदान–प्रदान भी अब पर्यटन के माध्यम से हुआ है। धार्मिक सहिष्णुता को बनाये रखने में पर्यटन के माध्यम से विभिन्न धर्मों के लोग एक–दूसरे के सम्पर्क में आये हैं। पर्यटन का शैक्षिक महत्व भी है। यहाँ पर स्थित शैक्षिक संस्थानों में भ्रमण कर पर्यटकों को विशेष जानकारी मिलती है। ज्ञान में वृद्धि से मानसिकता में बदलाव आता है और बदली हुई मानसिकता निश्चय ही व्यवहारको बदल देती है जिससे समाज निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर होता चला जाता है।

पर्यटन की आर्थिक विकास में प्रासंगिकता:

गढ़वाल हिमालय का आर्थिक विकास पर्यटन पर निर्भर है क्योंकि भौगोलिक विषमताओं के कारण यहाँ पर कृषि एवं अन्य व्यवसायों का समुचित विकास सम्भव नहीं हो सका। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर्यटन पर आश्रित है जिसका योगदान 70 प्रतिशत से अधिक है। पर्यटन एक श्रमपूरक उद्योग है जो कुशल और अकुशल दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों को रोजगार देता है। पर्यटन विकास से मोटर व्यवसाय का विकास हुआ है। होटल व्यवसाय में प्रबन्धन कमरा साफ–सफाई पूछताछ खानपान प्रबन्धन साज–सज्जा, बागवानी आदि कार्यों में व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। पर्यटन ट्रेवल एजेन्सीज भी रोजगार का सशक्त माध्यम है जिसमें टूर एण्ड डेवलप विभाग, गाइड एकाकृष्ट विभाग एवं कार्गो विभाग कार्यरत है। पर्यटकों के लिए प्रसिद्ध वस्तुओं की खरीददारी हेतु अनेक छोटी–बड़ी दुकानें खुली हुई है। यहाँ की हस्तनिर्मित वस्तुएं पर्यटकों को खूब पसन्द है। पर्यटन एक उद्योग न होकर उद्योगों का समूह है जिस पर अन्य उद्योग निर्भर करते हैं एवं जो पर्यटकों की इच्छाओं की पूर्ति करते है। पर्यटन के विकास से आवास व खान–पान उद्योग का भी विकास हुआ है। इस क्षेत्र में भोजनालयों, ढाबों, होटलों या खाने–पीने के सामान की दुकानों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। होटलों की बढ़ती हुई मांग के कारण ग्रामीण लोग सब्जी दूध दही का व्यापार भी बहुतायत में करने लगे है । यात्रा के दौरान बीमारी से बचाव हेतु जगह की गयी है। पर्यटकों के आवागमन के फलस्वरूप सड़कों का विकास जगह पर ओषधियों की दुकानें खुल तेजी से हुआ है जिससे परिवहन एवं संचार साधनों के विकसित होने से स्थानीय व्यक्तियों को रोजगार की समुचित प्राप्ति हुई है। हस्तशिल्प उद्योग तेजी से पनपा है। फोटोग्राफी उद्योग का विकास हुआ है। मनोरंजन एवं थियेटर उद्योग का विकास हुआ है। भिया उद्योग का विकास हुआ है। पर्यटन के कारण बैंक व बीमा क्षेत्र को भी लाभ पहुँचा है। पर्यटन उद्योग विदेशी पूँजी के विनियोग को प्रोत्साहित करता है क्योंकि यहाँ की नैसर्गिक सुन्दरता व अन्य आकर्षण विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों द्वारा किया गया व्यय भुगतान सन्तुलन की स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

गढ़वाल हिमालय के प्रमुख पर्यटक स्थल:

गढ़वाल हिमालय में वैसे अनेकों स्थल दर्शनीय है जो पर्यटकों को आकर्षित करते है किन्तु यहाँ केदारनाथ मन्दिर, नवदुर्गा मन्दिर, गौरी कुंड, त्रियुगीनारायण, पंचप्रयाग, देवप्रयाग, रघुनाथ मन्दिर, भरत मन्दिर, आघ. विश्वेश्वर मन्दिर, बागीश्वर महादेव, तुण्डीश्वर, चक्रधर विद्या मन्दिर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, विश्णुप्रयाग, यमुनोत्री, गंगोत्री, गौरीकुंड, पटांगण, केदार– गंगा संगम, शंकराचार्य की समाधि, भैरव मन्दिर, गोमुख, हरिद्वार, हर की पौड़ी, रामझूला, लक्ष्मणझूला, मनसा देवी, चण्डी देवी, नील धारा कनखल, बिलकेश्वर मन्दिर, सप्त स्रोत, भीमगोड़ा, ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम, योग निकेतन, स्वामी राम का हिमालय योग केन्द्र, गीताश्रम, परमार्थ निकेतन, गोविन्द घाट, जोशीमठ, ओली मुख्य है जहाँ पर वर्ष भर से पर्यटक लाखों की संख्या में आते है जिसमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक सम्मिलित है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि गढ़वाल हिमालय में पर्यटन विकास की अपार संभावनायें विद्यमान हैं। यह लगभग सभी प्रकार के पर्यटकों की दृष्टि से पर्यटन आकर्षण को संजोये हुए है। यहाँ पर लगभग 125 पर्यटक स्थलों में देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार क्षमता है। भौगोलिक स्थिति के कारण परिवहन के साधनों का समुचित विकास नहीं हो पाया है। उत्तराखण्ड सरकार द्वारा पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखकर तथा पर्यटन उद्योग के विकास को दृष्टिगत रखकर परिवहन साधनों में वृद्धि हेतु वृहत् योजना तैयार की गयी है। स्विटजरलैंड की एक पर्यटन संस्था 'स्विस कनेक्ट' द्वारा देहरादून नगर में एक हवाई अड्डा विकसित किया गया है। बद्रीनाथ एवं केदारनाथ में हवाई यात्रा की हैलीकॉप्टर सुविधा राज्य सरकार द्वारा शुरू की जा चुकी है।

हरिद्वार को रेलवे लाइन से जोड़ा गया है। बड़ी लाइन का यह मार्ग रायवाला से दो भागों में बंट जाता है। एक ऋषिकेश तथा दूसरा डोईवाला होते हुए देहरादून को जाता है। रेल यातायात की सुविधाओं को विकसित करने का यथा संभव प्रयत्न किया गया है तथा अधिक विकसित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा सभावनायें तलाशी जा रही है। स्थानीय स्तर पर पर्यटकों को सुविधा प्रदान करने के लिए टैक्सी टैम्पो आदि को चलाने की अनुमति दी गई है। पर्यटकों के ठहरने के लिए होटल, मोटल, रिसोर्ट की सुविधा है। इसके साथ ही यहाँ पर पर्यटकों के लिए मनोरंजन, संचार, खानपान, स्वास्थ्य, सुरक्षात्मक, क्षेत्रीय वस्तुओं एवं कला कृतियों बाजार एवं संरचनात्मक सुविधाओं को विकसित किया जा रहा है। गढ़वाल हिमालय पर्यटन सम्बन्धी आकर्षणों से भरपूर है। इसके सौन्दर्य स्थलों एवं अन्य प्रकार की पर्यटन सम्पदा को एक सूची में श्रृंखलाबद्ध करना चाहिए। यहाँ की सरकार को विभिन्न विभागों एवं स्थानीय जनता के पारस्परिक सहयोग से इस क्षेत्र को पर्यटकों के लिए विकसित एवं प्रचारित करना चाहिए। पर्यटन विकास के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण सम्बन्धित विषयों पर एकरूपता का होना आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. चोपड़ा, एस. 1991:टूरज्यिम एण्ड डवलपमेट इन इण्डिया, नई दिल्ली इफीसेन्ट प्रेस पृष्ठ–50
2. खड़कवाल, एस0सी0 1971:यू0पी0 हिमालयाज इन इण्डिया, ए रीजनल ज्योग्राफी, एन जी एस आई सिल्वर जुबली पब्लिकेषन पृष्ठ–75
3. पातीराम 1916 :गढ़वाल एनसीन्ट एण्ड माडर्न आर्मी प्रेस षिमला पृष्ठ–55
4. शर्मा, वी0 ए0 1977:ए विनडोआन गढ़वाल हिमालय, विजन बुकटा नई दिल्ली पृष्ठ–50
5. सिहॅ, टी0वी0 1975:टूरज्यिम एण्ड टूरिस्ट इण्ड्रस्टी इन उत्तर प्रदश पृष्ठ–85
6. नेगी, एस0 एस0 1990:ए हैण्डबुक ऑफ दि हिमालवाज, नई दिल्ली इण्डस पब्लिशिंगकम्पनी पृष्ठ–90
7. मदन, बी0के0 1970: मसूरी ए प्रोजेक्ट रिपोर्ट, अनपब्लिशिंग देहरादून पृष्ठ–40
8. कौर, जे0 एवं सिंह डी0पी0 1982:स्टडीज इन टूरज्यिम विल्डलाईफ नई दिल्ली पृष्ठ–110
9. सिहॅ, आर0 पी0 एवं शर्मा, एस0के0 2014:पर्यटन भूगोल, नेहा पब्लिकशन बरेली पृष्ठ–55
10. नवानी, लोकेश 2005:उत्तरांचल इयर बुक, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून

डॉ0 प्रदीप कुमार

अध्यक्ष, भूगोल विभाग

आईएफटीएम विश्वविद्यालय,

मुरादाबाद 244102

9457304042 7505488018